द्वितीय भाषा के रुप में हिंदी (कोड सं.–085) कक्षा 10वीं (2021-22)

भारत एक बहुभाषी देश है जिसमें बहुत सी क्षेत्रीय भाषाएँ रची बसी हैं। भाषिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भिन्न होने के बावजूद भारतीय परंपरा में बहुत कुछ ऐसा है जो एक दूसरे को जोड़ता है। यही कारण है कि मातृभाषा के रूप में अलग भाषा को पढ़ने वाला विद्यार्थी जब दूसरी भाषा के रूप में हिंदी का चुनाव करता है तो उसके पास अभिव्यक्ति का एक दृढ़ आधार पहली भाषा के रूप में पहले से ही मौजूद होता है। इसलिए छठी से आठवीं कक्षा में सीखी हुई हिंदी का विकास भी वह तेजी से करने लगता है। आठवीं कक्षा तक वह हिंदी भाषा में सुनने, पढ़ने, लिखने और कुछ-कुछ बोलने का अभ्यास कर चुका होता है। हिंदी की बाल पत्रिकाएँ और छिटपुट रचनाएँ पढ़ना भी अब उसे आ गया है। इसलिए जब वह नवीं एवं दसवीं कक्षा में हिंदी पढ़ेगा तो जहाँ एक ओर हिंदी भाषा के माध्यम से सारे देश से जुड़ेगा वहीं दूसरी ओर अपने क्षेत्र और परिवेश को हिंदी भाषा के माध्यम से जानने की कोशिश भी करेगा, क्योंकि किशोरवय के इन बच्चों के मानसिक धरातल का विकास विश्व स्तर तक पहुँच चुका होता है।

शिक्षण उद्देश्य

- दैनिक जीवन में हिंदी में समझने-बोलने के साथ-साथ लिखने की क्षमता का विकास करना।
- हिंदी के किशोर-साहित्य, अखबार व पत्रिकाओं को पढ़कर समझ पाना और उसका आनंद उठाने की क्षमता का विकास करना।
- औपचारिक विषयों और संदर्भों में बातचीत में भाग ले पाने की क्षमता का विकास करना।
- हिंदी के जरिए अपने अनुभव संसार को लिख कर सहज अभिव्यक्ति कर पाने में सक्षम बनाना।
- संचार के विभिन्न माध्यमों (प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक) में प्रयुक्त हिंदी के विभिन्न रूपों को समझने की योग्यता का विकास करना।
- कक्षा में बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक संदर्भों के प्रति संवेदनशील सकारात्मक सोच बनाना।
- अपनी मातृभाषा और परिवेशगत भाषा को साथ रखकर हिंदी की संरचनाओं की समझ बनाना।
- सामाजिक मुद्दों पर समझ बनाना| (जाति, लिंग तथा आर्थिक विषमता)
- कविता, कहानी तथा घटनाओं को रोचक ढंग से लिखना ।
- जाति, धर्म, रीति-रिवाज तथा लिंग के विषय को समझने की क्षमता का विकास ।
- भाषा एवं साहित्य को समझने एवं आत्मसात करने की दक्षता का विकास।

शिक्षण युक्तियाँ

- द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाई जा रही हिंदी भाषा का स्तर पढ़ने और पढ़ाने दोनों ही दृष्टियों से मातृभाषा सीखने की तुलना में कुछ मंथर गति से चलेगा। वह गति धीरे-धीरे बढ़ सके, इसके लिए हिंदी अध्यापकों को बड़े धीरज से अपने अध्यापन कार्यक्रमों को नियोजित करना होगा। किसी भी द्वितीय भाषा में निपुणता प्राप्त करने-कराने का एक ही उपाय है-उस भाषा का लगातार रोचक अभ्यास करना-कराना। ये अभ्यास जितने अधिक रोचक, सक्रिय एवं प्रासंगिक होंगे विद्यार्थियों की भाषिक उपलब्धि भी उतनी ही तेजी से हो सकेगी। मुखर भाषिक अभ्यास के लिए वार्तालाप, रोचक कहानी सुनना-सुनाना, घटना-वर्णन, चित्र-वर्णन, संवाद, वाद-विवाद, अभिनय, भाषण प्रतियोगिताएँ, कविता पाठ और अंत्याक्षरी जैसी गतिविधियों का सहारा लिया जा सकता है।
- काव्य भाषा के मर्म से विद्यार्थी का परिचय कराने के लिए जरूरी होगा कि किताबों में आए काव्यांशों की लयबद्ध प्रस्तुतियों के ऑडियो-वीडियो कैसेट तैयार किए जाएँ। अगर आसानी से कोई गायक/गायिका मिले तो कक्षा में मध्यकालीन साहित्य के अध्यापन-शिक्षण में उससे मदद ली जानी चाहिए।
- रा.प .और प्र .अ.शै.,(एनसिखाने की -सीखने/ द्वारा उपलब्ध कराए गए अधिगम प्रतिफल (.टी.आर.ई.सी. प्रक्रिया जो इस पाठ्यचर्या के साथ संलग्नक के रूप में उपलब्ध है, को शिक्षक द्वारा क्षमता आधारित शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त करने के लिये अनिवार्य रूप से इस्तेमाल करने की आवश्यकता है।
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय के विभिन्न संगठनों तथा स्वतंत्र निर्माताओं द्वारा उपलब्ध कराए गए अन्य कार्यक्रम/ई सामग्री/ वृत्तचित्रों और सिनेमा को शिक्षण-सामग्री के तौर पर इस्तेमाल करने की जरूरत है। इनके प्रदर्शन के क्रम में इन पर लगातार बातचीत के जरिए सिनेमा के माध्यम से भाषा के प्रयोग की विशिष्टता की पहचान कराई जा सकती है और हिंदी की अलग-अलग छटा दिखाई जा सकती है।
- कक्षा में सिर्फ एक पाठ्यपुस्तक की उपस्थिति से बेहतर होगा कि शिक्षक के हाथ में तरह-तरह की पाठ्यसामग्री को विद्यार्थी देखें और कक्षा में अलग-अलग मौकों पर शिक्षक उनका इस्तेमाल कर सकें।
- भाषा लगातार ग्रहण करने की क्रिया में बनती है, इसे प्रदर्शित करने का एक तरीका यह भी है कि शिक्षक खुद यह सिखा सकें कि वे भी शब्दकोश, साहित्यकोश, संदर्भग्रंथ की लगातार मदद ले रहे हैं। इससे विद्यार्थियों में इनके इस्तेमाल करने को लेकर तत्परता बढ़ेगी। अनुमान के आधार पर निकटतम अर्थ तक पहुँचकर संतुष्ट होने की जगह वे सटीक अर्थ की खोज करने के लिए प्रेरित होंगे। इससे शब्दों की अलग-अलग रंगत का पता चलेगा, वे शब्दों के बारीक अंतर के प्रति और सजग हो पाएँगे।

- भिन्न क्षमता वाले विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त शिक्षण-सामग्री का इस्तेमाल किया जाए तथा किसी भी प्रकार से उन्हें अन्य विद्यार्थियों से कमतर या अलग न समझा जाए।
- कक्षा में अध्यापन को हर प्रकार की विविधताओं (लिंग, धर्म, जाति, वर्ग आदि) के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील वातावरण निर्मित करना चाहिए।

श्रवण (सुनने) और वाचन (बोलने) की योग्यताएँ

- प्रवाह के साथ बोली जाती हुई हिंदी को अर्थबोध के साथ समझना।
- हिंदी शब्दों का ठीक उच्चारण करना तथा हिंदी के स्वाभाविक अनुतान का प्रयोग करना।
- सामान्य विषयों पर बातचीत करना और परिचर्चा में भाग लेना।
- हिंदी कविताओं को उचित लय, आरोह-अवरोह और भाव के साथ पढ़ना।
- सरल विषयों पर कुछ तैयारी के साथ दो-चार मिनट का भाषण देना।
- हिंदी में स्वागत करना, परिचय और धन्यवाद देना।
- हिंदी अभिनय में भाग लेना।

श्रवण तथा वाचन परीक्षा हेतु दिशा-निर्देश

- **श्रवण (सुनना) (2.5 अंक)**: वर्णित या पठित सामग्री को सुनकर अर्थग्रहण करना, वार्तालाप करना, वाद-विवाद, भाषण, कवितापाठ आदि को सुनकर समझना, मूल्यांकन करना और अभिव्यक्ति के ढंग को समझना।
- **वाचन (बोलना) (2.5 अंक)**: भाषण, सस्वर कविता-पाठ, वार्तालाप और उसकी औपचारिकता, कार्यक्रम-प्रस्तुति, कथा-कहानी अथवा घटना सुनाना, परिचय देना, भावानुकूल संवाद-वाचन।

श्रवण (सुनना) एवं वाचन (बोलना) कौशल का मूल्यांकन:

- परीक्षक किसी प्रासंगिक विषय पर एक अनुच्छेद का स्पष्ट वाचन करेगा। अनुच्छेद तथ्यात्मक या सुझावात्मक हो सकता है। अनुच्छेद लगभग 80-100 शब्दों का होना चाहिए।

या

- परीक्षक 1 -1.5 मिनट का श्रव्य अंश (ऑडियो क्लिप) सुनवाएगा। अंश रोचक होना चाहिए। कथ्य/ घटना पूर्ण एवं स्पष्ट होनी चाहिए। वाचक का उच्चारण शुद्ध, स्पष्ट एवं विराम चिह्नों के उचित प्रयोग सहित होना चाहिए।

- परीक्षार्थी ध्यानपूर्वक परीक्षक/ऑडियो क्लिप को सुनने के पश्चात परीक्षक द्वारा पूछे गए प्रश्नों का अपनी समझ से मौखिक उत्तर देंगे।

कौशलों के अंतरण का मूल्यांकन

(इस बात का निश्चय करना कि क्या विद्यार्थी में श्रवण और वाचन की निम्नलिखित योग्यताएँ हैं)

	श्रवण (सुनना)		**वाचन (बोलना)**
1	परिचित संदर्भों में प्रयुक्त शब्दों और पदों को समझने की सामान्य योग्यता है।	1	केवल अलग-अलग शब्दों और पदों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है।
2	छोटे सुसंबद्ध कथनों को परिचित संदर्भों में समझने की योग्यता है।	2	परिचित संदर्भों में केवल छोटे संबद्ध कथनों का सीमित शुद्धता से प्रयोग करता है।
3	परिचित या अपरिचित दोनों संदर्भों में कथित सूचना को स्पष्ट समझने की योग्यता है।	3	अपेक्षाकृत दीर्घ भाषण में जटिल कथनों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है।
4	दीर्घ कथनों की शृंखला को पर्याप्त शुद्धता से समझने के ढंग और निष्कर्ष निकाल सकने की योग्यता है।	4	अपरिचित स्थितियों में विचारों को तार्किक ढंग से संगठित कर धारा-प्रवाह रूप में प्रस्तुत करता है।
5	जटिल कथनों के विचार-बिंदुओं को समझने की योग्यता प्रदर्शित करने की क्षमता है।	5	उद्देश्य और श्रोता के लिए उपयुक्त शैली को अपना सकता है।

वाचन -श्रवण कौशल एवं परियोजना कार्य का मूल्यांकन विद्यालय स्तर पर आंतरिक परीक्षक द्वारा ही किया जाएगा।

पठन कौशल

<u>पढ़ने की योग्यताएँ</u>

- हिंदी में कहानी, निबंध, यात्रा-वर्णन, जीवनी, पत्र, डायरी आदि को अर्थबोध के साथ पढ़ना।
- पाठयवस्तु के संबंध में विचार करना और अपना मत व्यक्त करना।
- संदर्भ साहित्य को पढ़कर अपने काम के लायक सूचना एकत्र करना।

- पठित सामग्री के विभिन्न अंशों का परस्पर संबंध समझना।
- पठित वस्तु का सारांश तैयार करना।
- भाषा, विचार एवं शैली की सराहना करना।
- साहित्य के प्रति अभिरुचि का विकास करना।

लिखने की योग्यताएँ

- लिखते हुए व्याकरण-सम्मत भाषा का प्रयोग करना।
- हिंदी के परिचित और अपरिचित शब्दों की सही वर्तनी लिखना।
- विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग करना।
- लेखन के लिए सक्रिय (व्यवहारोपयोगी) शब्द भंडार की वृद्धि करना।
- प्रभावपूर्ण भाषा तथा लेखन-शैली का स्वाभाविक रूप से प्रयोग करना।
- उपयुक्त अनुच्छेदों में बांटकर लिखना।
- प्रार्थना पत्र, निमंत्रण पत्र, बधाई पत्र, संवेदना पत्र, आदेश पत्र, ई मेल, एस.एम.एस आदि लिखना और विविध प्रपत्रों को भरना।
- विविध स्रोतों से आवश्यक सामग्री एकत्र कर एक अभीष्ट विषय पर अनुछेद लिखना।
- देखी हुई घटनाओं का वर्णन करना और उन पर अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करना।
- पढ़ी हुई कहानी को संवाद में तथा संवाद को कहानी में परिवर्तित करना।
- समारोह और गोष्ठियों की सूचना और प्रतिवेदन तैयार करना।
- लिखने में मौलिकता और सर्जनात्मकता लाना।

रचनात्मक अभिव्यक्ति

अनुच्छेद लेखन

- पूर्णता – संबंधित विषय के सभी पक्षों को अनुच्छेद के सीमित आकार में संयोजित करना|
- क्रमबद्धता – विचारों को क्रमबद्ध एवं तर्कसंगत विधि से प्रकट करना|
- विषय-केन्द्रित – प्रारंभ से अंत तक अनुच्छेद का एक सूत्र में बंधा होना|
- समासिकता– सीमित शब्दों में यथासंभव पूरी बात कहने का प्रयास, अनावश्यक बातें न करके केवल विषय संबद्ध वर्णन-विवेचन|

पत्र लेखन

- अनौपचारिक पत्र विचार-विमर्श का जरिया जिनमें मैत्रीपूर्ण भावना निहित, सरलता, संक्षिप्त और सादगी के साथ लेखन शैली|
- औपचारिक पत्रों द्वारा दैनंदिनी जीवन की विभिन्न स्थितियों में कार्य, व्यापार, संवाद, परामर्श, अनुरोध तथा सुझाव के लिए प्रभावी एवं स्पष्ट संप्रेषण क्षमता का विकास|
- सरल और बोलचाल की भाषा शैली, उपयुक्त, सटीक शब्दों के प्रयोग, सीधे-सादे ढंग से स्पष्ट और प्रत्यक्ष बात की प्रस्तुति|
- प्रारूप की आवश्यक औपचारिकताओं के साथ सुस्पष्ट, सुलझे और क्रमबद्ध विचार आवश्यक तथ्य, संक्षेप और सम्पूर्णता के साथ प्रभावान्विति|

विज्ञापन लेखन

विज्ञापित वस्तु / विषय को केंद्र में रखते हुए

- विज्ञापित वस्तु के विशिष्ट गुणों का उल्लेख|
- आकर्षक लेखन शैली|
- प्रस्तुति में नयापन, वर्तमान से जुड़ाव तथा दूसरों से भिन्नता|
- विज्ञापन में आवश्यकतानुसार नारे (स्लोगन) का उपयोग| (विज्ञापन लेखन में बॉक्स, चित्र अथवा रंग का उपयोग अनिवार्य नहीं)

संवाद लेखन

दो या दो से अधिक लोगों के बीच होने वाले वार्तालाप/ बातचीत विषय, काल्पनिक या किसी वार्ता को सुनकर यथार्थ पर आधारित संवाद लेखन की रचनात्मक शक्ति का विकास, कहानी, नाटक, फिल्म और टीवी सीरियल से लें।

- पात्रों के अनुकूल भाषा शैली|
- शब्द सीमा के भीतर एक दूसरे से जुड़े सार्थक और उद्देश्यपूर्ण संवाद|
- वक्ता के हाव-भाव का संकेत|
- संवाद लेखन के अंत तक विषय/ मुद्दे पर वार्ता पूरी|

सूचना लेखन

किसी विशेष सूचना को सार्वजनिक करना, कम शब्दों में औपचारिक शैली में लिखी गई संक्षिप्त जानकारी जिसमें लेखन में

- उद्देश्य की स्पष्टता|
- आम बोलचाल की भाषा और सरल वाक्यों का प्रयोग|
- स्पष्ट शीर्षक, मुख्य तथ्य/ विषय वस्तु, उपयोगी संपर्क सूत्र के साथ स्पष्ट संप्रेषण क्षमता|

संदेश लेखन (शुभकामना, पर्व-त्योहारों एवं विशेष अवसरों पर दिए जाने वाले संदेश)

- विषय से संबद्धता
- संक्षिप्त और सारगर्भित
- भाषाई दक्षता एवं प्रस्तुति
- रचनात्मकता/सृजनात्मकता

कहानी लेखन (दी गई पंक्तियों के आधार से कहानी लेखन)

- निरंतरता
- रचनात्मकता/कल्पना शक्ति का उपयोग
- प्रभावी संवाद/ पात्रानुकुल संवाद
- जिज्ञासा/ रोचकता
- कथात्मकता

नारा लेखन (दिए गए विषय पर आधारित नारा लेखन)

- शब्दों का उपयुक्त चयन एवं आपसी ताल-मेल
- विषय से संबद्धता
- आकर्षण
- मौलिकता
- रचनात्मकता

कक्षा 10वीं हिंदी‘ब’ परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन 2021-2022

- **प्रश्न-पत्र दो खण्डों - खंड 'अ' और 'ब' का होगा|**
- **खंड 'अ' में 53 वस्तुपरक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के ही उत्तर देने होगें |**
- **खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे| प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे |**

भारांक 80 **निर्धारित समय 3 घंटे**

		परीक्षा भार विभाजन	
		विषयवस्तु	**भार**
		खंड अ (वस्तुपरक प्रश्न)	**40**
1		**अपठित गद्यांश (चिंतन क्षमता एवं अभिव्यक्ति कौशल पर बहुविकल्पात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे)**	**10**
	अ	चार अपठित गद्यांशों में से कोई दो गद्यांश करने होंगे| (200-250 शब्दों के) 2 गद्यांश x(5 प्रश्न)	10
2		**व्याकरण: पाठ्यपुस्तक में दिए गए भाषा-अध्ययन के आधार पर बहुविकल्पात्मक प्रश्न (1 अंक x16 प्रश्न)**	**16**
	1	पद बंध (3 में से किन्हीं 2 के उत्तर)	02
	2	रचना के आधार पर वाक्य रूपांतरण (4 में से किन्हीं 3 के उत्तर)	03
	3	समास (5 में से किन्हीं 4 के उत्तर)	04
	4	मुहावरे (4 प्रश्न)	04
	5	अलंकार (अनुप्रास, यमक, उपमा, रूपक, अतियोशक्ति, मानवीकरण) (3 प्रश्न)	03
3		**पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग – 2**	**14**

	काव्य खंड	04
	पठित पद्यांश पर चार बहुविकल्पी प्रश्न। (4 प्रश्न)	
	गद्य खंड	10
	दो पठित गद्यांशों पर पाँच-पाँच बहुविकल्पी प्रश्न। 2 गद्यांश x (5 प्रश्न)	
	खंड (वर्णनात्मक प्रश्न) ब –	**40**
4	**पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग – 2**	**08**
	1 स्पर्श से निर्धारित पाठों के आधार पर विषय-वस्तु का ज्ञान, बोध, अभिव्यक्ति आदि पर 25 - 30 शब्दों वाले तीन में दो प्रश्न पूछे जाएंगे। (2 अंक x 2 प्रश्न)	04
	2 स्पर्श से निर्धारित पाठों के आधार पर विद्यार्थियों की उच्च चिंतन क्षमताओं एवं अभिव्यक्ति का आकलन करने हेतु 60-70 शब्दों वाला (4 अंक x 1 प्रश्न)	04
	पूरक पाठ्यपुस्तक संचयन भाग – 2	**06**
	पूरक पाठ्यपुस्तक संचयन के निर्धारित पाठों से तीन में से दो प्रश्न पूछे जाएगें जिनका उत्तर 40-50 शब्दों में देना होगा| (3 अंक x 2 प्रश्न)	06
5	**लेखन**	**26**
	अ संकेत बिंदुओं पर आधारित समसामयिक एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए किन्हीं तीन विषयों में से किसी एक विषय पर 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद| (6 अंक x1 प्रश्न) (विकल्प सहित)	6
	ब औपचारिक विषय से संबधित पत्र। (5 अंक x1 प्रश्न) (विकल्प सहित)	5
	स व्यावहारिक जीवन से संबंधित विषयों पर आधारित 30-40 शब्दों में सूचना लेखन| (5 अंक x1 प्रश्न) (विकल्प सहित)	5

	द	विषय से संबंधित 25-50 शब्दों के अंतर्गत विज्ञापन लेखन। (5 अंक x1 प्रश्न) (विकल्प सहित)	5
	इ	लघु कथा लेखन – दिए गए प्रस्थान बिंदु के आधार पर 100-120 शब्दों में लघु कथा लेखन| (5 अंक x1 प्रश्न) (विकल्प सहित)	5
कुल			**80**

निर्धारित पुस्तकें:

1. **स्पर्श, भाग–2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण
2. **संचयन, भाग–2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण

❖ **नोट: निम्नलिखित पाठ हटा दिये गये हैं ।**

पद्य खंड	
1.	महादेवी वर्मा-मधुर-मधुर मेरे दीपक जल
गद्य खंड	
2.	अंतोन चेखव-गिरगिट

कक्षा दसवीं हेतु प्रश्न पत्र का विस्तृत प्रारूप जानने के लिये कृपया बोर्ड द्वारा जारी आदर्श प्रश्न पत्र देखें।